नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

इंदौर घराने की परंपरा को सँवारने और रूपांतरित करने में पंडित अमरनाथ का योगदान

डॉ. राहुल प्रकाश
सहायक प्राध्यापक, संगीत विभाग,
माया सोमैया स्कूल ऑफ म्यूजिक एंड परफॉर्मिंग आर्ट,
सोमैया विद्याविहार यूनिवर्सिटी, मुंबई

सार-संक्षेप

भारतीय शास्त्रीय संगीत की विविध घराना परंपराएँ उसकी बहुआयामी समृद्धि का परिचायक हैं। इनमें इंदौर घराना, जिसकी नींव उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब ने रखी, अपनी गम्भीर, भावपूर्ण और रागदारी प्रधान गायकी के कारण विशेष स्थान रखता है। इस घराने की परंपरा को आगे बढ़ाने और संवारने में उनके प्रमुख शिष्य पंडित अमरनाथ का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने परंपरागत विशेषताओं को अक्षुण्ण रखते हुए उसमें नवीनता का संचार किया और इस शैली को व्यापक मंचों पर प्रतिष्ठित किया। प्रस्तुत शोध-पत्र की परिकल्पना यह है कि इंदौर घराना की परंपरा को संरक्षित, सुदृढ़ एवं रूपांतरित करने में पंडित अमरनाथ का योगदान अत्यंत निर्णायक एवं प्रभावशाली रहा है, जिसके परिणामस्वरूप घराने को स्थायित्व और वैश्विक पहचान प्राप्त हुई। इस शोध-प्रपत्र को प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न प्रणालियों का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति इस पद्धति के अंतर्गत इंदौर घराने की उत्पत्ति, विकास, परंपरा एवं उस्ताद अमीर ख़ाँ तथा पंडित अमरनाथ के जीवनवृत्त, सांगीतिक यात्रा और समकालीन संदर्भों का अध्ययन, उपलब्ध ग्रंथों, शोध-प्रबंधों, पत्र-पत्रिकाओं एवं अभिलेखीय सामग्री का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। इंदौर घराने की गायकी की विशेषताओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। उनके वरिष्ठ शिष्यों एवं संगीतज्ञों (जैसे पंडित बलदेव राज वर्मा आदि) से साक्षात्कार, प्रत्यक्ष प्रस्तुतियों का अवलोकन, मौखिक परंपरा के अंतर्गत प्राप्त जानकारियों का अध्ययन किया गया है। आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अन्य संस्थानों में उपलब्ध ध्वनि–मुद्रणों का अध्ययन, पुस्तकालयों, संगीत अकादमियों एवं सांस्कृतिक संस्थानों में सुरक्षित पांडुलिपियों और रिकॉर्डिंग्स का परीक्षण किया गया है। यह शोध प्रपत्र मुख्यतः गुणात्मक स्वरूप का है। क्योंकि इसमें सांगीतिक अभिव्यक्ति, भाव-तत्व, शैलीगत विशिष्टता और परंपरा के संरक्षण जैसे अमूर्त तत्वों का अध्ययन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में, पंडित अमरनाथ के द्वारा परंपरा का संरक्षण, रूपांतरण और नवाचार, शैक्षणिक योगदान, अंतरराष्ट्रीय प्रचार, लेखन और रचनात्मकता दर्शाया गया है।

मुख्य शब्द – इंदौर घराना, उस्ताद अमीर खान, पंडित अमरनाथ, वाग्गेयकार, संगीतज्ञ।

शोध-पत्र

इंदौर घराना : संक्षिप्त परिचय

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परंपरा में विभिन्न घरानों का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। इन्हीं में से एक महत्त्वपूर्ण घराना है इंदौर घराना, जिसकी स्थापना सुविख्यात गायक पद्मभूषण उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब (1912-1974) ने की। इस घराने का उद्भव बीसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ और शीघ्र ही यह अपनी विशिष्ट शैली तथा गंभीर प्रस्तुति के कारण संगीत जगत में प्रतिष्ठित हो गया। इंदौर घराने की प्रमुख विशेषता इसकी गंभीरता, रागदारी की शुद्धता तथा भावप्रधानता है। इस शैली में गायन का आधार अति विलम्बित लय में अत्यंत धीमी गति का आलाप, लंबी मींडों का प्रयोग तथा स्वरों की गहराई है। विलंबित ख्याल की प्रस्तुति में विस्तार और संयम के साथ-साथ राग की आत्मा को प्रकट करने पर विशेष बल दिया जाता है। तानों का प्रयोग प्रायः सीमित और संयमित रहता है, जिससे गायन में एक गंभीर, ध्यानपूर्ण वातावरण निर्मित होता है।

उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब ने 'मेरुखंड' को अत्यंत सुंदर और व्यवस्थित रूप से प्रयोग किया।उन्होंने लंबे आलापों और मींडों के बीच मेरुखंड का उपयोग कर स्वर-साधना को नया आयाम दिया। मेरुखंड हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक अत्यंत जटिल और बौद्धिक परंपरा है। यह स्वर विन्यास की ऐसी पद्धति है जिसमें राग के निश्चित स्वरों को अलग-अलग क्रमों और संयोजनों में गाकर उसकी अनगिनत संभावनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।उदाहरणः यदि किसी राग में तीन स्वर (सा, रे, ग) लिए जाएँ, तो उनका मेरुखंड होगा–सा रे ग, सा ग रे, रे सा ग, रे ग सा, ग सा रे, ग रे सा। (वर्मा) "मेरुखण्ड प्रयोग का अर्थ केवल गणितीय स्वर-समूहों का गायन नहीं अपितु सांगीतिक सौंदर्यात्मक दृष्टि का निपुण प्रयोग कर राग की भावात्मक अवतारणा करना है।" (तेजपाल सिंह) "उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब की मधुर कंठ वाली कलात्मक गायकी का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा 'सरगम' गायन था। उन्होंने बोलबाँट के स्थान पर उसी तरह की लयकारी का सरगम - तान के रूप में प्रयोग किया।

इसके अंतर्गत विभिन्न वर्णों - स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी का प्रयोग करते थे। अपने अध्ययन, चिंतन, मनन एवं रियाज़ से उन्होंने अपनी गायकी को नई विशेषताओं से विभूषित किया।"(तेजपाल सिंह) उन्होंने इंदौर घराने के ख्याल गायन की परंपरा को एक नई दिशा प्रदान की। इस घराने के माध्यम से संगीत में सरलता, गाम्भीर्य तथा आध्यात्मिकता का समन्वय देखने को मिलता है।

यद्यपि अमीर खान साहब के जीवनकाल में ही उनकी गायकी को 'इंदौर घराना' के नाम से जाना जाने लगा था एवं उन्होंने एक साक्षात्कार में भी यह बताया है के मैं इंदौर घराने के नाम से ही आजकल गा रहा हूँ, परन्तु फिर भी संगीत की परंपरा के दावेदार कई महानुभावों ने इसे यह कह कर अस्वीकार कर दिया था के 'कम से कम तीन पीढ़ी तक गुरु-शिष्य परंपरा' को सिद्ध नहीं करता। अब इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि उस्ताद अमीर खान साहब के शिष्य पंडित अमरनाथ जी के शिष्य पंडित बलदेव राज वर्मा (1993 से) आकाशवाणी के टॉप ग्रेड कलाकार (तेजपाल सिंह) एवं शिष्या विदुषी शांति शर्मा भी एक प्रख्यात ख्याल गायिका थीं। सुप्रसिद्ध पार्श्व गायिका रेखा भारद्वाज भी पंडित अमरनाथ जी की शिष्या हैं। वर्तमान में इस घराने के चौथी एवं पांचवीं पीढ़ी के कलाकारों में कई उभरते हुए गायक हैं जिनमें से लेखक स्वयं भी चौथी पीढ़ी के आकाशवाणी के बी-हाई श्रेणी के अनुमोदित कलाकार हैं। इस घराने की परंपरा को आगे बढ़ाने और सँवारने में उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब के प्रमुख शिष्य पंडित अमरनाथ का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने परंपरागत विशेषताओं को अक्षुण्ण रखते हुए उसमें नवीनता का संचार किया और इस शैली को व्यापक मंचों पर प्रतिष्ठित किया।

पंडित अमरनाथ का जीवन परिचय एवं सांगीतिक योगदान :–

पंडित अमरनाथ का जन्म 22 मार्च 1924 को झंग (अब पाकिस्तान) में हुआ। उन्होंने 1942 से 1947 तक लाहौर के प्रोफेसर बी. एन. दत्ता से संगीत की प्रारंभिक प्रशिक्षण प्राप्त की और भारत विभाजन के बाद दिल्ली आ गए। पंडितजी 1948 में उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब के शिष्य बने और लगभग दो दशकों तक उनके साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे। "टाइम्स ऑफ इंडिया में डॉ. राघव मेनन द्वारा 20वीं शताब्दी में जन्मे हिंदुस्तानी संगीत के केवल चार महान प्रतिभाशाली संगीतज्ञों में से एक के रूप में चयनित, पंडित अमरनाथ को अपने गुरु, स्वर्गीय उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब द्वारा प्रवर्तित इंदौर घराने के प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया गया"। (पंडित अमरनाथ) "पंडित अमरनाथजी ने न केवल गुरु परंपरा को आगे बढ़ाया, बल्कि स्वयं भी लगभग 200 से अधिक ख्याल रचनाएँ और अनेक नवीन रागों जैसे अमरकली, गुनरंजनी, पंचम कल्याण, औडव आसावरी (शोभावरी), मारु बसंत, काफ़ी मल्हार और श्याम - भूप की रचना की"।(वर्मा) पंडित अमरनाथ जी द्वारा रचित बंदिशों पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं की उनकी रचनाएँ 'मितुरंग', मीत, मितवा अपनाम से प्राप्त होती हैं। उनकी कई बंदिशों में उपनाम का प्रयोग नहीं किया गया है।(वर्मा)

पंडित अमरनाथ कृत नवसृजित राग एवं स्वरचित बंदिशें :–

1. पंचम कल्याण - मध्यलय तीनताल - ढल चली रात ढ़लत उमरिया।
2. औढ़व आसावरी - द्रुत तीनताल - सेली बदल सहेलियाँ।
3. मारु बसंत -मध्यलय तीन ताल - मारु बसंत गावत मन मेरो आज।
4. काफी मल्हार - मध्यलय तीनताल - बदरा आये हो, बरसे बिन जाना ना।
5. श्याम - भूप - सांचे गीत गाओ, नवल गाओ न गाओ।

प्रचलित व अप्रचलित रागों में स्वरचित बंदिशें–

1. राग बिहाग- मध्यलय तीनताल- तू मोरा सब कछु लागे।
2. राग बागेश्री - द्रुत एकताल - अपनी बेर साईं अब देर काहे कीनी।
3. राग जैजैवंती - मध्यलय तीनताल - विधना ऐसी कबहुँ न रचिये।
4. राग जैजैवंती - द्रुत एकताल - मितवा मोरे घर न आये।
5. राग शुद्ध सारंग - मध्यलय एकताल – लगन लागी अगन जागी।
6. राग बिलासखानी तोड़ी - विलम्बित एकताल - हमरे बांचों भाग विधाता।
7. राग रागेश्री - द्रुत एकताल - चैन ढूंढें जोगी।
8. राग भैरव - द्रुत एकताल - महादेव शिव शंकर।
9. राग भूपाली - मध्यलय तीनताल - मनवाँ सुर को साध रे।
10. राग बैरागी भैरव - द्रुत एकताल - साँची सुरन गावो रे।
11. राग भीमपलासी - झपताल - राम भज राम भज।
12. राग अल्हैया बिलावल - द्रुत तीनताल - अमृत अमृत दीजे।
13. राग कलावती- द्रुत तीनताल - सिमरन कीजे वाको'
14. राग कोमल ऋषभ आसावरी - द्रुत तीनताल - का री करूँ अब मोरा जिया।
15. राग गोरख कल्याण - द्रुत एकताल - पिया तोरे गुणन का कहिये।
16. राग यमन कल्याण - मध्यलय तीनताल - ऐरी सजनी साँझ सलोनी आयी।
17. राग श्याम कल्याण - मध्यलय तीनताल - जब से जोगी आये सपन में।
18. राग नट भैरव - मध्यलय तीनताल - सांचो तेरो नाम।
19. राग मेघ - द्रुत एकताल - अबके सावन तुम हमरे नैनन बरसो रे।
20. राग पूर्वी - द्रुत एकताल - तोरा मोरा मन एको।
21. राग चंद्रकौंस - द्रुत तीनताल - अब नित नित सुरे सों बनी रहे मोरी प्रीत।
22. राग शिवरंजनी - द्रुत एकताल – तोरी सुधि आवे।
23. राग गुणकली - तव पार ब्रह्म पाएं जब ही नाद साधे।
24. राग गौड़ सारंग - द्रुत एकताल - जग तजे सुर भजे राग जगे मन माहीं।

25. राग जयंत मल्हार - द्रुत तीनताल - जा जा रे बदरा जा।
26. राग अहिरी तोड़ी - मध्यलय - सोइ घडी सोइ बेला अपना।
27. राग गौरी - कोउ न एकला डार - डार।
28. राग गौरी - उड़ जा रे पखेरूआ।
29. राग मियां मल्हार - जब जब घिर घिर आये मेघा।

पंडितजी ने 200 से अधिक मौलिक ख़याल की बंदिशें देश की शास्त्रीय धरोहर को समर्पित कीं, जो मुख्यतः उपमहाद्वीप की सूफ़ी संस्कृति में उनकी गहरी जड़ों का परिणाम थीं। इस उपलब्धि ने उन्हें पिछली शताब्दी के सबसे विशिष्ट और दुर्लभ वर्ग के आचार्यों—वाग्गेयकारों में स्थान दिलाया। पंडितजी ने कई मौलिक राग तथा राग-संयोजन की रचना की, साथ ही अनेक कर्नाटक रागों को हिंदुस्तानी शैली में ढालकर प्रस्तुत किया, जो अब हिंदुस्तानी संगीत और उनके घराने के महत्त्वपूर्ण अंग बन गए हैं। उनके इस साहित्यिक और संगीत योगदान का कुछ हिस्सा दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा बंबई के संवाद फाउंडेशन में संग्रहित है। 'संगीतज्ञों के संगीतज्ञ' कहे जाने वाले पंडित अमरनाथ ने भारत और विदेशों में व्यापक रूप से प्रस्तुतियाँ दीं। वे पहले भारतीय संगीतज्ञ थे जिन्होंने अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय के फॉग आर्ट म्यूज़ियम में प्रस्तुति दी। वर्षों तक उन्होंने भारत के सभी प्रमुख संगीत समारोहों (शंकरलाल, स्वामी हरिदास, तानसेन, विष्णु दिगंबर और सवाई गंधर्व उत्सव सहित), रेडियो संगीत सम्मेलनों तथा संगीत अकादमियों जैसे संगीत रिसर्च अकादमी, भारत भवन, कलाक्षेत्र और राष्ट्रीय नाट्य एवं संगीत केंद्र में भी प्रदर्शन किए। आकाशवाणी के 'टॉप ग्रेड' कलाकार के रूप में, उन्हें आकाशवाणी और दूरदर्शन पर व्यापक कवरेज प्राप्त हुआ, जिसमें कई राष्ट्रीय कार्यक्रम और 'ग्रेट मास्टर्स' जैसी फिल्म-श्रृंखलाएँ शामिल हैं।

वे संगीत पर अपने गहन विचारों के प्रमुख व्याख्याता थे और हार्वर्ड विश्वविद्यालय, संगीत अनुसंधान अकादमी (कलकत्ता), भारत भवन (भोपाल), स्पिक-मैके, फिल्म एंड टेलीविज़न इंस्टिट्यूट (पुणे), इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (दिल्ली), इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़ (शिमला), मैक्सम्यूलर भवन (बंबई), आकाशवाणी, दूरदर्शन, त्रिवेणी कला संगम और भारतीय कला केंद्र जैसी संस्थाओं में 30 वर्षों तक लेक्चर-डेमो दिए। पंडितजी ने नाटकों और फिल्मों के लिए भी संगीत रचना की। 1949-56 के बीच उन्होंने आकाशवाणी के एक्सटर्नल सर्विसेज डिविज़न में पंडित रविशंकर के साथ संगीतकार-सुपरवाइज़र के रूप में कार्य किया।

उन्होंने 1955 की फ़िल्म गरम कोट (जिसमें बलराज साहनी और निरूपा रॉय थे) के लिए संगीत दिया, जिसके सारे गीत लता मंगेशकर ने गाए। इसके अलावा उन्होंने मिर्ज़ा ग़ालिब पर एक डॉक्यूमेंट्री का संगीत भी तैयार किया। इस डॉक्यूमेंट्री में उस्ताद अमीर ख़ान की पहली और एकमात्र ग़ज़ल रिकॉर्ड की गई थी। उन्होंने फीचर फिल्म, डॉक्यूमेंट्री, टेलीप्ले और धारावाहिकों के लिए भी संगीत दिया, जैसे—बेगम ज़ैदी की आम्रपाली, राजिंदर सिंह बेदी की गरम कोट, एम. एस. सत्यु की ग़ालिब, चोली दामन, सब हवा है, तथा मोहन राकेश का आषाढ़ का एक दिन।

1957 से उन्होंने अध्यापन आरंभ किया—पहले त्रिवेणी कला संगम (दिल्ली) में गायन संगीत विभागाध्यक्ष के रूप में और बाद में 1978 से 1990 तक श्रीराम भारतीय कला केंद्र में गुरु के रूप में। उनकी शिक्षण शैली (तालीम) में नवाचार ने संगीत शिक्षा को अधिक व्यवस्थित और व्यावहारिक बनाया। उनके कई शिष्यों ने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की, जिनमें पंडित बलदेव राज वर्मा, स्वर्गीय विदुषी शांति शर्मा, पार्श्व गायिका रेखा भरद्वाज, महेंद्र शर्मा, प्रो. यशपाल शर्मा एवं मीना बनर्जी प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त, बांग्लादेश, अफगानिस्तान और पाकिस्तान से सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत कई छात्रों ने भी उनके निर्देशन में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के माध्यम से अध्ययन किया।

पंडितजी की प्रसिद्ध पुस्तक 'लिविंग इडियम्स इन हिंदुस्तानी म्यूज़िक' (1949 में प्रकाशित, बाद में हार्पर कॉलिन्स द्वारा पुनर्प्रकाशित) संगीत शब्दावली का एक महत्त्वपूर्ण शब्दकोश है, जिसमें लुप्त होती मौखिक परंपरा की शब्दावली सुरक्षित की गई है। यह उनकी 'राष्ट्र को प्रेमपूर्ण भेंट' कही जाती है। इसके अलावा, उन्होंने आईसीएसएसआर (1985-88) के लिए हिंदुस्तानी संगीत की शिक्षण प्रणालियों पर शोध परियोजना का निर्देशन किया। उनका शोध-प्रतिवेदन आधुनिक शिक्षा और गुरु-शिष्य परंपरा दोनों पर आधारित है और भविष्य के लिए महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करता है। वे हिंदी कवि भी थे। उनकी हंसा के बैन (राजकमल प्रकाशन) में 101 कविताएँ संकलित हैं। पंडित अमरनाथ को संगीत जगत में अमूल्य योगदान के लिए स्वरमणि पुरस्कार (1976), साहित्य कला परिषद पुरस्कार (1987-88) और राजा राम मोहन राय पुरस्कार (1992) से सम्मानित किया गया।

पंडित अमरनाथ का निधन 9 मार्च 1996 को हुआ। उनकी स्मृति में पंडित अमरनाथ फ़ाउंडेशन द्वारा 'पंडित अमरनाथ वाग्गेयकार सम्मान' कुछ वर्षों तक प्रदान किया गया, जो फ़ाउंडेशन की अध्यक्षा सुपुत्री बिंदु चावला द्वारा आयोजित किया जाता था। बिंदु चावला द्वारा लिखित पुस्तक 'Conversations with Pandit Amarnath" (पंडित अमरनाथ से वार्तालाप) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, दिल्ली द्वारा 2004 में प्रकाशित हुई। पंडित अमरनाथ कृत 'इंदौर के मसीहा / Prophets of Indore' (उस्ताद अमीर ख़ान साहब के संस्मरण) 2008 में पंडित अमरनाथ मेमोरियल फ़ाउंडेशन द्वारा प्रकाशित हुई।

पंडित अमरनाथ पर प्रस्तुत कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ :—

- "पंडित अमरनाथ संगीत के महान आचार्य थे, जिनका संगीत गणितीय और बौद्धिक था उनकी बंदिशों में राग की आत्मा झलकती थी।" — डॉ. राघव मेनन, टाइम्स ऑफ इंडिया
- "दुनिया के कुछ ही संगीतकार ऐसे ऊँचाइयों तक पहुँच पाते हैं।" —स्टुअर्ट कैरी वेल्च, हार्वर्ड विश्वविद्यालय

- "हिंदुस्तानी संगीत की गहरी समझ वे उसी आनंद से संप्रेषित करते थे, जैसे बर्नस्टीन पश्चिमी संगीत में करते हैं।"–टाइम्स ऑफ इंडिया
- "अत्यंत कल्पनाशील, कोमल और संवेदनशील कलाकार एक संगीतज्ञों के संगीतज्ञ।"–टाइम्स ऑफ इंडिया / स्टेट्समैन
- "विश्वकोशीय ज्ञान वाले गुरु बौद्धिक दृष्टि से दुर्लभ, वास्तव में महानतम संगीतज्ञों में से एक।"–पेट्रियट (अमरनाथ)

निष्कर्षतः, इंदौर घराना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गंभीर, भावप्रधान तथा साधनापरक गायन की एक सशक्त धारा है, जिसने संगीत को उच्चकोटि की गरिमा और नवीन दृष्टि प्रदान की। पंडित अमरनाथ ने इंदौर घराने की परंपरा को संजोने और रूपांतरित करने में सेतु का कार्य किया। वे एक ओर उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब की शैली के सच्चे प्रतिनिधि रहे, तो दूसरी ओर उन्होंने नवाचार और समयानुकूल परिवर्तन द्वारा इसे जीवंत बनाए रखा। उनकी शिक्षण परंपरा, रचनात्मक दृष्टि और अंतरराष्ट्रीय प्रचार ने इंदौर घराने को स्थायित्व और वैश्विक पहचान प्रदान की। इंदौर घराने की परंपरा को सँवारने और रूपांतरित करने में पंडित अमरनाथ के योगदान को निम्न बिंदुओं द्वारा स्पष्ट निष्कर्ष के रूप से समझा जा सकता है–

1. **परंपरा का संरक्षणः** पंडित अमरनाथ ने उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब की गहराईपूर्ण आलाप-चारी शैली, धीमी गति की विलंबित रचनाएँ और राग की भावनात्मक अभिव्यक्ति को ज्यों का त्यों संरक्षित रखा।
2. **रूपांतरण और नवाचारः** उन्होंने स्वनिर्मित रागों एवं नई बंदिशों की रचना कर घराने को समृद्ध किया तथा गायकी में सरसता और सहजता का समावेश किया, जिससे श्रोताओं का जुड़ाव और बढ़ा।
3. **शैक्षणिक योगदानः** गुरु के रूप में उन्होंने देश -विदेश में अनेक शिष्यों को प्रशिक्षण दिया, जिससे घराने की परंपरा निरंतर बनी रही।
4. **अंतर्राष्ट्रीय प्रचारः** उन्होंने विदेशों में अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत कर इंदौर घराने को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया।
5. **लेखन और रचनात्मकताः** उनकी रचनाएँ और संगीत–चिंतन घराने की वैचारिक गहराई को दर्शाते हैं। निःसंदेह, पंडित अमरनाथ की कला एवं योगदान ने भारतीय संगीत परंपरा को समृद्ध किया है,जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायी रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. साक्षात्कार - पंडित बलदेव राज वर्मा, साक्षात्कर्ता - डॉ. राहुल प्रकाश, दिनांक – 20 जून 2025
2. सिंह, तेजपाल, प्रेरणा अरोड़ा, संगीत के देदीप्यमान सूर्य उस्ताद अमीर खां, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली -110002, द्वितीय संस्करण 2010, पृष्ठ 11
3. वही, पृष्ठ 39
4. वही, पृष्ठ 69
5. अमरनाथ, पंडित, इंदौर के मसीहाः पंडित अमरनाथजी द्वारा उस्ताद अमीर ख़ान साहब के संस्मरण, पंडित अमरनाथ मेमोरियल फाउंडेशन, 20 भारती कॉलोनी, इंद्रप्रस्थ एक्सटैंशन, दिल्ली- 110092, प्रथम संस्करण 2008, पृष्ठ 167
6. साक्षात्कार - पंडित बलदेव राज वर्मा, साक्षात्कर्ता - डॉ. राहुल प्रकाश, दिनांक – 29 दिसंबर 2024
7. वही
8. वही
8. अमरनाथ, पंडित, इंदौर के मसीहाः पंडित अमरनाथजी द्वारा उस्ताद अमीर ख़ान साहब के संस्मरण, पंडित अमरनाथ मेमोरियल फाउंडेशन, 20 भारती कॉलोनी, इंद्रप्रस्थ एक्सटैंशन, दिल्ली- 110092, प्रथम संस्करण 2008, पृष्ठ 167